भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, मुख्यालय - ग्वालियर से संचालित

दैनिक पर्यटन समाचार

IITTM पर्यटन शिक्षा संस्कृति रक्षा

दिनांक: रविवार 18 जुलाई 2021 संपादकः प्रो. (डॉ.) आलोक शर्मा, निदेशक, भापयाप्रसं पृष्ठ 1

"प्रकृति में गहराई से देखिये, और आप हर एक चीज बेहतर ढंग से समझ सकेंगे...!" - अल्बर्ट आइंस्टीन

रविवार विशेषांक

सभी पाठकों को सादर नमस्कार!

प्रिय पाठकों, आज के रविवार विशेष अंक में हम बात कर रहे हैं भारत में बढ़ते **"कृषि पर्यटन" (एग्री टूरिज्म)** की।

भारत त्यौहारों का देश है। भारत में कई जातियों और धर्मों के बड़े-बड़े त्योहार मनाए जाते हैं। विविधता के मामले में भारत पूरी दुनिया का घर है; पूरी दुनिया में जितनी विविधता है, भारत में हमारे पास उतनी ही विविधता है। विविध भारत में कई त्यौहार, उत्सव, त्यौहार, वर्षगाँठ, राष्ट्रीय त्यौहार, परंपराएँ, जीवन शैली, बोलियाँ और अन्य संस्कृतियाँ देखी जा सकती हैं, विविधता भारत की पहचान है। यहां की संस्कृति और परंपराओं को देखने के लिए दुनिया भर से लोग साल भर भारत आते हैं। भारत में पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। हर साल लाखों विदेशी पर्यटक भारत आते हैं। जबकि दिल्ली, केरल, असम, जम्मू और कश्मीर, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों में घरेलू पर्यटकों द्वारा विभिन्न कारणों से दौरा किया जाता है। अकेले भारत में कई तरह के पर्यटन हैं। इसके लिए विदेशी पर्यटक भारत आना पसंद करते हैं। भारत के हर राज्य की एक अलग पहचान है। केरल प्रकृति पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, जम्मू और कश्मीर अपने बर्फीले क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान अपने महलों के लिए जाना जाता है और अब महाराष्ट्र गडकिला सहित अपने कृषि-पर्यटन के लिए जाना जाता है। कृषि पर्यटन पर्यटन का एक अनूठा रूप है। देश में महाराष्ट्र अपने किलों के लिए तो प्रसिद्ध है ही और अब यह कृषि-पर्यटन के लिए भी लोकप्रिय हो रहा है। कृषि पर्यटन एक ऐसा माध्यम है जो कृषि और ग्रामीण संस्कृति का परिचय देता है। कृषि-पर्यटन ग्रामीण भारत को समझने के लिए देश भर के पर्यटकों के लिए एक माध्यम के रूप में उभर रहा है। वर्तमान में, महाराष्ट्र में लगभग 800 कृषि-पर्यटन केंद्र हैं।

क्या है कृषि पर्यटन?

कृषि-पर्यटन शहरी पर्यटकों को अपने खेत में आमंत्रित करने और कृषि और गांव की संस्कृति को प्रदर्शित करने के बारे में है। फार्म पर्यटन के माध्यम से कृषि कैसे की जाती है, शहरी पर्यटकों को अपने-अपने तरीके से विभिन्न फसलों और फलों की जानकारी देना। किसान कब, क्या, कैसे और किसके लिए फसल (फल, फूल, खाद्यान आदि)

संपादक मण्डल - डॉ. सौरभ दीक्षित, डॉ. चन्द्रशेखर बरूआ. समाचार संग्रह व प्रस्तुति-मयंक दुबे. डिजाइन - दीपक मित्तल

उगाने के लिए कड़ी मेहनत करता है। दोपहर के समय पर्यटकों को प्रामाणिक भारतीय ग्रामीण भोजन की जानकारी देना और गांव वालों को खेत में जो भी सब्जी या स्थानीय सब्ज़ी है उसे खाने के लिए देना। कृषि-पर्यटन केंद्र में शाम के समय ठहरने वाले पर्यटकों को स्थानीय एवं पारंपरिक खेलों की जानकारी देना / उनके साथ खेलना। पर्यटकों के लिए गांव का दौरा, गाँव में ऐसी प्रसिद्ध कहानियाँ सुनाना। गांव के इतिहास, भूगोल, पर्यावरण और आर्थिक गणित की व्याख्या करना। यह सब करने में किसानों को पर्यटकों से कुछ मुआवजा मिलता है। पर्यटकों को गाँव और कृषि संस्कृति की जानकारी से समृद्ध करने का अर्थ है कृषि पर्यटन। देश में पहली बार महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन की शुरुआत हुई। कई किसान पूरक व्यवसाय (साइड बिज़नस) के रूप में कृषि-पर्यटन में संलग्न हैं। कृषि-पर्यटन के माध्यम से किसानों को पैसा, प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त हो रहा है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम विकास हो रहा है, रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। कृषि-पर्यटन के माध्यम से शहर के पर्यटक विभिन्न प्रकार के पर्यटन का अनुभव कर सकते हैं।

भारत में कृषि-पर्यटन के अवसर

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि *"भारत की आत्मा गांवों में बसती है।"* ग्रामीण भारत में लगभग 60% लोग कृषि और कृषि व्यवसाय में लगे हुए हैं। कृषि के एक सहायक के रूप में, किसान विभिन्न प्रकार के कृषि पूरक व्यवसायों में संलग्न हैं। वे मुर्गी पालन, पशु पालन, बकरी पालन, भेड़ पालन, मधुमक्खी पालन और अन्य पूरक व्यवसायों में लगे हुए हैं। कृषि-पर्यटन इन सभी कृषि-व्यवसायों का एक पूरक व्यवसाय है। जब देशी या विदेशी पर्यटक भारत आते हैं तो वे भारत के अनेक पर्यटन स्थलों का भ्रमण करते हैं, पूरे भारत में यात्रा करता है। यदि हम इन पर्यटकों पर विचार करें, तो हम उनके लिए अपने दर्शनीय कृषि स्थल में ठहरने की व्यवस्था कर सकते हैं। जब विदेशी पर्यटक भारत आते हैं तो वे शहरी भारत से अधिक ग्रामीण भारत देखना पसंद करते हैं या ग्रामीण भारत में रहना और देखना पसंद करते हैं। ग्रामीण भारत, भारत का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि भारत सरकार या अन्य राज्य सरकारें, विदेशी और घरेलू पर्यटकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कृषि-पर्यटन नीति बनाती हैं, तो भविष्य में एक महान अवसर बनाया जा सकता है। यद्यपि भारत में वर्तमान में विदेशी पर्यटक शहरी क्षेत्रों में होटलों में रह रहे हैं, भविष्य में होटलों के विकल्प के रूप में कृषि-पर्यटन केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं। पर्यटन का उद्देश्य देश के किसानों को शनिवार, रविवार और छुट्टियों के दिन अपने खेतों पर आमंत्रित कर उन्हें गांव की कृषि संस्कृति और संस्कृति

महत्वपूर्ण सूचना: आईआईटीटीएम में बीबीए (टूरिज्म एंड ट्रेवल) और एमबीए (टूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट) में प्रवेश आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2021 तक बढ़ा दी गई है।

के साथ-साथ फार्म टूरिज्म, फसलों व खेत की जानकारी देना है।

कोरोना के बाद कृषि-पर्यटन का दायरा

पिछले दो साल से हम सब कोरोना से जूझ रहे हैं और लोगों को बहुत नुकसान पहुंचाया है। छोटे व्यवसायों को बहुत अधिक नुकसान हुआ। आजादी के बाद पहली बार हम सभी ने बड़ी संख्या में प्रवासियों को देखा। लाखों की संख्या में आबादी शहर से गांव चली गई, सबका काम चला गया है। नतीजतन, गांव के युवाओं ने कई पारंपरिक व्यवसाय

करना शुरू कर दिया और अब युवा शहर में काम पर नहीं लौटना चाहता। इस पलायन के चलते गांव के कई युवा गांव में कुछ करने की इच्छा जताने लगे। यहीं से युवा कृषि-पर्यटन को एक सामूहिक परियोजना के रूप में देखने लगे। साथ ही, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, कृषि-पर्यटन के लिए चार महत्वपूर्ण कारकों की आवश्यकता होती है: गाँव, कृषि, किसान और पर्यटक। कोई भी व्यक्ति जिसके पास ये चार घटक हैं, वह विश्व में कहीं भी कृषि-पर्यटन कर सकता है।

कोरोना के बाद की स्थिति बदल गई है। पर्यटक स्थानीय पर्यटन को अधिक महत्व दे रहे हैं। विश्व पर्यटन संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अनुसार 2020 में पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण विकास संभव है। पिछले वर्ष विश्व पर्यटन दिवस 2020 की थीम भी "टूरिज्म एंड रूरल डेवलपमेंट" (पर्यटन एवं ग्रामीण विकास) थी। कोरोना काल में, जब तक कोरोना का प्रभाव पूरी तरह से खत्म नहीं हो जाता, विदेशों में जाना खतरनाक हो सकता है। इस वजह से हमें स्थानीय और क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए। कृषि पर्यटन, स्थानीय पर्यटन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। कोरोना और कृषि-पर्यटन को ध्यान में रखते हुए, कोरोना के बाद कृषि-पर्यटन में अवसर और काफी गुंजाइश है। कृषि पर्यटन - पर्यटन की आत्मा है। यदि भारत में पर्यटन करना है तो कृषि-पर्यटन के क्षेत्र पर विचार किए बिना पर्यटन पूर्ण नहीं हो सकता। यह मानते हुए कि भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोगों के पास कृषि है, प्रत्येक किसान अपनी ताकत और जरूरतों को पहचान सकता है और कृषि और ग्रामीण पर्यटन में संलग्न हो सकता है। जैसे भारत

में पर्यटन महत्वपूर्ण है, वैसे ही कृषि पर्यटन भी महत्वपूर्ण है। यदि भारत में किसान यह सोचते हैं कि कृषि-पर्यटन एक नकद और आसान कृषि-व्यवसाय है, तो देश में विश्व में सबसे अधिक कृषि-पर्यटन है।

लेखक श्री गणेश चप्पलवार, महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन सलाहकार हैं और भारत में कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

हाल ही में ग्रामीण पर्यटन व कृषि पर्यटन विषय पर आईआईटीटीएम द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें देश में कृषि पर्यटन के क्षेत्र में कार्य कर रहे है विशेषज्ञों को आमंत्रित कर उनसे विचार विमर्श किया गया।

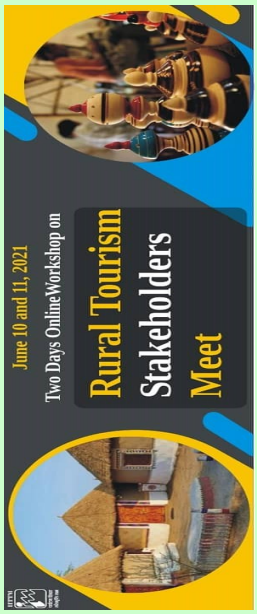

कवियों, साहित्यकारों, संगीतकारों के गांवों को किया जाए विकसित

स्कूल के पाठ्यक्रम में एग्री टूरिज्म को शामिल करने से बच्चों में बढ़ेगा इंट्रेस्ट

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

ग्वालियर ◆ भारत कृषि प्रधान देश है। फॉरेनर्स हमारी परम्परा, खानपान और संस्कृति से परिचित होना चाहते हैं। इसके लिए हम उन्हें रूरल टूरिज्म की ओर लेकर जा सकते हैं। दक्षिण भारत में टूरिस्ट काफी संख्या में रूरल एरिया में पहुंचते हैं। इस कॉन्सेप्ट को पूरे देश में जल्द लागू करना होगा। इससे गांवों में एम्प्लॉयमेंट बढ़ेगा और किसानों व युवाओं को गांव में ही रोका जा सकेगा। इसके अलावा स्कूल प्रणाली में कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की आवश्यकता है। ताकि युवा मन को गांवों का दौरा करने और कृषि के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया जा सके। यह बात एग्री टूरिज्म इंडिया के प्रबंध निदेशक पांडुरंग तावरे ने आइटीएम यूनिवर्सिटी के पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष जयंत सिंह तोमर ने ग्रामीण पर्यटन के लिए ऐसे गांवों को विकसित करने के कई सुझाव दिए, जो कवियों, साहित्यकारों, संगीतकारों जैसी प्रसिद्ध हस्तियों से जुड़े हैं। दूसरी ओर ग्रामीण पर्यटन स्थलों के व्यापक प्रचार और विपणन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रकाश डाला।

पर्यटन स्थलों के व्यापक प्रचार की जरूरत

कार्यशाला में कही। यह वर्कशॉप आइआइटीटीएम की ओर से गुरुवार से शुरू हुई। इसका विषय 'पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के साथ आत्मनिर्भर भारत का निर्माण' रखा गया।

कार्यशाला का समापन आज : कार्यशाला के दूसरे दिन शुक्रवार को उत्तराखंड से जीवन वर्मा, गुजरात से पार्थ मेहता, ओरछा से वंदना दुबे और अश्विनी भाटी उपस्थित रहेंगे।

बांस की खेती से पर्यावरण रहेगा सुरक्षित

ग्रीन बैम्बू नर्सरी के सह संस्थापक सुभाष भाटिया ने कहा कि ऑक्सीजन पर्यटन और बांस पर्यटन जैसी नई शब्दावली की शुरुआत हुई है और इस प्रकार बांस की खेती से पर्यावरण की सुरक्षा में अहम रोल अदा किया जा सकता है। कार्यशाला में उपस्थित स्पीकर्स ने स्थानीय ग्रामीण आबादी के प्रशिक्षण और कौशल विकास के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

पीपुल्स समाचार

स्कूल प्रणाली में कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की जरूरत है

आईआईटीटीएम में ग्रामीण पर्यटन हितधारकों के लिए आयोजित कार्यशाला

पीपुल्स संवाददाता ● ग्वालियर
editor@peoplessamachar.co.in

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान द्वारा भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के साथ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को लेकर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला के पहले दिन एग्री टूरिज्म इंडिया प्रबंध निदेशक पांडुरंग तावरे ने कहा कि स्कूल प्रणाली में कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की जरूरत है, ताकि युवाओं को गांवों का दौरा करने और कृषि के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया जा सके। ग्रामीण पर्यटन कमाई के वैकल्पिक साधन प्रदान करके खेती से संबंधित अनिश्चितता को कम करने में मदद करता है और इस प्रकार कॉन्सेप्ट को पूरे देश में जल्द लागू करना होगा। इससे गांवों में एम्प्लॉयमेंट बढ़ेगा और किसानों व युवाओं को गांव में ही रोका जा सकेगा। इसके अलावा स्कूल प्रणाली में कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की आवश्यकता है। ताकि युवा मन को गांवों का दौरा करने और कृषि के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया जा सके। यह बात एग्री टूरिज्म इंडिया के प्रबंध निदेशक पांडुरंग तावरे ने कही। यह वर्कशॉप आइआइटीटीएम की ओर से गुरुवार से शुरू हुई। इसका विषय 'पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के साथ आत्मनिर्भर भारत का निर्माण' रखा गया।

कार्यशाला का समापन आज : कार्यशाला के दूसरे दिन शुक्रवार को उत्तराखंड से जीवन वर्मा, गुजरात से पार्थ मेहता, ओरछा से वंदना दुबे और अश्विनी भाटी उपस्थित रहेंगे।

नईदुनिया

अब तो विदेशी भी आकर्षित हो रहे हैं ग्रामीण पर्यटन की तरफ

ग्वालियर (नप.)। ग्रामीण क्षेत्र का पर्यटन काफी समृद्ध है। इसकी तरफ शहरी क्षेत्र के लोग ही नहीं, विदेशी भी आकर्षित हो रहे हैं। अगर इस तरफ ध्यान दिया जाए तो हम ग्रामीणों को काफी मजबूत कर सकते हैं। अब तो सरकार ने आदर्श ग्राम योजना भी शुरू कर दी है, इसके अंतर्गत गांवों को गोद लेकर ग्रामीणों को पर्यटन से संबंधित बातें बताई जा रही हैं। यह कहना था एग्री टूरिज्म इंडिया के प्रबंध निदेशक पांडुरंग तावरे का। वे गुरुवार को भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान (आईआईटीटीएम) की दो दिवसीय कार्यशाला के शुभारंभ सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस दो दिवसीय कार्यशाला को भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के साथ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण थीम दी गई।

स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों को कराएं गांव का भ्रमण

वक्ताओं ने कहा कि स्कूल के विद्यार्थियों को पर्यटन के बारे में बताना चाहिए। उनके मन में ग्रामीण पर्यटन को लेकर विचार आए, उसके लिए उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण करना चाहिए। उन्हें कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की जरूरतों को बताने की जरूरत है। ग्रामीण पर्यटन कमाई के वैकल्पिक साधन प्रदान कर खेती से संबंधित अनिश्चितता को कम करने में मदद करता है। इतना ही नहीं नौकरियों के लिए प्रवास को रोकने में भी मदद करता है। ग्रीन बैम्बू नर्सरी के सह संस्थापक सुभाष भाटिया ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि ऑक्सीजन पर्यटन और बांस पर्यटन जैसी नई शब्दावली की शुरुआत हुई है।

स्वदेश ग्वालियर समूह का स्वर्ण जयंती वर्ष

www.swadeshnews.in

स्वदेश

ग्रामीण पर्यटन व कृषि पर्यटन नीति पर दिया जोर

आईआईटीटीएम में दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

ग्वालियर, न.सं. भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान (आईआईटीटीएम) द्वारा भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के साथ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को लेकर दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ गुरुवार को किया गया। कार्यशाला में कृषि पर्यटन के प्रबंध निदेशक पांडुरंग तावरे, ग्रीन बैम्बू नर्सरी, जक्कलपुर के सह-संस्थापक सुभाष भाटिया, छोटाराम प्रजापति, आईटीएम विवि के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग विभागाध्यक्ष जयंत सिंह तोमर वक्ता के रूप में उपस्थित थे। वक्ताओं ने प्रमुख रूप से ग्रामीण पर्यटन या कृषि पर्यटन नीति पर जोर दिया गया, ताकि किसानों या जमीदारों को ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और उन्हें वित्तीय व प्रचार सहायता भी प्रदान की जा सके। पांडुरंग तावरे ने स्कूल प्रणाली में कृषि पर्यटन या कृषि से संबंधित शिक्षा मॉडल की आवश्यकता को बताया, ताकि युवा मन को गांवों का दौरा करने और कृषि के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया जा सके। ग्रीन बैम्बू नर्सरी के सह संस्थापक सुभाष भाटिया ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि ऑक्सीजन पर्यटन और बांस पर्यटन जैसी नई शब्दावली की शुरुआत हुई है और इस प्रकार बांस की खेती से पर्यावरण की सुरक्षा में एक अहम रोल अदा किया जा सकता है। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ. आलोक शर्मा ने भी विचार व्यक्त किया। इस कार्यशाला का दूसरा सत्र 11 जून को होगा।

मुद्रा अद्यतन (##)

मुद्रा	मूल्य ₹
1 USD (US$)	74.64
1 EURO (€)	88.12
1 GBP (£)	102.78
1 JPY (¥)	0.678
1 AUD (A$)	55.21

(##) सभी आंकड़े लाइव मिड-मार्केट रेट हैं, जो उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध नहीं हैं और केवल सूचना के उद्देश्य से हैं।

ग्वालियर, शुक्रवार 11 जून, 2021

City भास्कर

बैंबू चारकोल के साबुन, इंटरलॉक पद्धति से बनी दरी देखने के लिए आते हैं विदेशी

ग्रामीण पर्यटन पर वेबिनार

सिटी रिपोर्टर . ग्वालियर

साल 2012 में मैंने पारंपरिक खेती छोड़कर बैंबू उगाने की शुरुआत की। मेरी टैगलाइन है-बांस है तो सांस है। यह मैं इसलिए कहता हूं कि बैंबू का पौधा 35% अधिक कार्बनडाईऑक्साइड एब्जॉर्ब करता है। मैं बैंबू के चारकोल से साबुन बनाता हूं और मंजन लांच करने की तैयारी कर रहा हूं। यह अनुभव ग्रीन बैंबू नर्सरी के सह-संस्थापक सुभाष भाटिया ने साझा किए। वे गुरुवार को ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने विषय पर आयोजित वेबिनार में बोल रहे थे। इसमें आईआईटीटीएम के डायरेक्टर प्रो.आलोक शर्मा, जयंत तोमर सहित अन्य वक्ता ऑनलाइन जुड़े।

▪ साबुन दिखाते सुभाष भाटिया

होम स्टे की सुविधा

▪ सलावास ग्राम जोधपुर के ऑनर छोटाराम प्रजापति ने कहा कि उनके यहां दरी इंटरलॉकिंग पद्धति पर बनाई जाती है, जो कि अलग ही तरीका है। इसे देखने के लिए विदेशी पर्यटक आते हैं। इसलिए घर को होम स्टे कॉन्सेप्ट पर तब्दील किया। ऐसे ही प्रोजेक्ट से ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों की संख्या बढ़ सकती है।

एडमिशन को लेकर अधिक जानकारी के लिए
ईमेल करें: admissions@iittm.ac.in
कॉल करें: +91-9425407607
वेबसाइट: www.iittm.ac.in

आप 'दैनिक पर्यटन समाचार' में पर्यटन विषय पर अपने लेख/विचार एवं अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिये हमें संपर्क कर सकते हैं।
ईमेल द्वारा: social@iittm.ac.in व्हाट्सएप द्वारा: +91 70427 30070

आपका दिन शुभ हो...।

@IITTMHQ @iittmhq IITTMHeadquarter

अस्वीकरण: भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर मुख्यालय द्वारा प्रस्तुत 'दैनिक पर्यटन समाचार' का मूल उद्देश्य पर्यटन अकादमिक जगत को दैनिक आधार पर हो रही घटनाओं व गतिविधियों से रूबरू कराना है, चूँकि पर्यटन जगत बहुत 'गतिक' (डायनेमिक) है। इस समाचार पत्र का स्त्रोत आधार विभिन्न सूचना माध्यमों से प्राप्त सम्प्रेषण है। अतः इनकी पुष्टि, संस्थान व संपादन मंडल नहीं करता है। हालांकि अकादमिक हित में इसकी प्रस्तुति केवल ज्ञान उन्नयन हेतु की जाती है।